

डॉ. अगस्त कोकिल, नीतिवचन, सत्र 5

© 2024 अगस्त कोकिल और टेड हिल्डेब्रांट

नीतिवचन में आपका पुनः स्वागत है। नीतिवचन की पुस्तक का यह हमारा 5वां सत्र है। हम नीतिवचन की संपूर्ण पुस्तक के परिचय में वार्ता की एक श्रृंखला के बारे में बात करने जा रहे हैं।

हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं कि पहले नौ अध्याय बच्चों के साथ माता-पिता की बातचीत का एक संग्रह है। तो, इस बातचीत में हम जो करने जा रहे हैं वह उनमें से कई पर गौर करना है जो काफी निकटता से संबंधित हैं। वे सभी उस तरीके के बारे में बात करते हैं जिसमें पिता बच्चे को संबोधित करते हैं या माता-पिता, मुझे कहना चाहिए, बच्चे को संबोधित करते हैं।

क्योंकि नीतिवचन में पिता और माता शामिल हैं, जैसा कि हमारे पास अध्याय 1, श्लोक 8 में है। इसलिए, हम हिब्रू में पिता को शॉर्टहैंड के रूप में उपयोग करते हैं, लेकिन यह वह तरीका है जिससे माता-पिता बच्चे को निर्देश देते हैं। तो, हम इन कई अलग-अलग छोटी वार्ताओं को देखने जा रहे हैं। पहला अध्याय 3 में आता है, या मुझे कहना चाहिए, वास्तव में, यह तीसरा है।

अध्याय 2 वार्ता का दूसरा भाग था। यह श्रृंखला में तीसरा है। आज हम जिस पर पहली नज़र डालने जा रहे हैं वह अध्याय 3, पहले 12 छंदों में आता है।

एक बहुत ही शक्तिशाली छोटा सा टुकड़ा जिसका मैंने कई बार प्रचार किया है क्योंकि इसमें बहुत सारे प्रमुख विषय हैं। इसकी शुरुआत माता-पिता द्वारा बच्चे को संबोधित करते हुए यह कहते हुए होती है, मेरी शिक्षा को मत भूलना। मेरी आज्ञाओं को अपने मन में सुरक्षित रखो।

इन मूल्यों को अपनी सोच में सबसे आगे रखें। क्योंकि इसी तरह आपको अच्छे दिन या लंबे दिन मिलते हैं। यह तुम्हें दया और सच्चाई की शिक्षा देता है।

यह सोचने का एक तरीका है। मानव होने का अर्थ दयालु होना है, जैसा कि चर्च के पिताओं ने कहा है। लेकिन, निःसंदेह, मनुष्य के रूप में हममें जो दया है वह ईश्वर की ओर से आती है।

तो, यह दया ही है जो हमें ईश्वर और लोगों के बीच अनुग्रह और सम्मान प्रदान करती है। यह जीवन के मूलभूत मुद्दे, अन्य लोगों के साथ हमारे रिश्ते, हम दूसरों के साथ कैसे मिलते हैं, की मूलभूत बात है। और यह सब उस चीज़ से शुरू होता है जिसे हमने पहले ही भगवान का भय कहा है, जिसे हमने भगवान पर निर्भरता कहा है, इस विचार को खारिज करते हुए कि हम स्वयं अपनी सोच के भीतर यह निर्धारित करने की क्षमता रखते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है।

इसलिए, पूरे मन से प्रभु पर भरोसा रखें और अपनी समझ का सहारा न लें। अपने सभी तरीकों से, उसे जानें और वह आपका मार्ग निर्देशित करेगा। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मत बनो।

ईश्वर से डरो और जो गलत है उससे फिरो। अब, यह केवल मूलभूत बात है। ज्ञान के उस वृक्ष से दूर रहो।

इसका मतलब ये नहीं कि आप अपनी बुद्धि का प्रयोग न करें. कहावतें पूरी तरह से अपनी बुद्धि का उपयोग करने के बारे में हैं। यह सब सोचने और समझने की बात है।

लेकिन समस्या स्वतंत्रता की इस धारणा में है कि मैं जो भी बनना चाहता हूँ वह बनने के लिए स्वतंत्र हूँ। मनुष्य में सत्ता के लिए यह जन्मजात चाहत होती है। और सत्ता पाने की इस चाहत में, वे जो करना चाहते हैं उसे करने की आज़ादी चाहते हैं, चाहे कुछ भी और करना पड़े।

यह घातक दोष है. बुद्धि कहती है, प्रभु से डरो। जब भगवान कहते हैं कि जीवन इस तरह से काम करता है, तो जीवन इस तरह से काम करता है।

और यदि आप अपने रास्ते जाने के लिए उस रास्ते से भटकते हैं, जो सही है उसके बारे में अपने निर्णयों पर भरोसा करते हैं, और अपनी समझ पर भरोसा करते हैं, तो आपको जो मिलने वाला है वह मृत्यु है। तुम्हें जो मिलने वाला है वह विनाश है। जैसा कि लेडी विजडम ने अपने कॉल में कहा था, आपको विपत्ति का वह दिन मिलने वाला है।

तो, यह बस इसकी एक मौलिक पुष्टि है। तो फिर, यदि हम विश्वास और जीवन के मार्गदर्शक के रूप में ज्ञान का अनुसरण कर सकें तो क्या होगा? आप जानते हैं, यह काफी दिलचस्प है। स्वास्थ्य के लिए लाभ, यह आपकी हड्डियों के लिए उपचारकारी होगा।

धन-संपत्ति में लाभ, आपके खलिहान प्रचुर मात्रा में भरने वाले हैं। और सुधार के लाभ, जब आप गलत होते हैं तो भगवान आपको यह जानने में मदद करेंगे। अब, यह अपने आप में काफी लंबा उपदेश हो सकता है, और मैं इसे यहां देने का विरोध करूंगा।

लेकिन मैं आपको सही दिशा में इंगित करना चाहता हूँ। क्या ज्ञान जिस तरह से जीवन जीने का निर्देश देता है, उससे स्वास्थ्य को कोई लाभ होता है? अरे हाँ, वहाँ हैं। क्या बुद्धि कह रही है, ओह, तुम कभी बीमार नहीं पड़ोगे? खैर, निःसंदेह, वह ऐसा नहीं कह रही है।

जीवन का मतलब यह तय करना नहीं है कि हम कब बीमार पड़ेंगे। वास्तव में, कभी-कभी, कुछ प्रकार की बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। और तीसरे बिंदु में हमारे पास यही है।

हम अक्सर प्रेरित पौलुस के शरीर के कांटे का उल्लेख करते हैं, जिसे दूर करने के लिए उसने तीन बार प्रार्थना की थी। और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वास्तव में कुछ ऐसा लाभ था जो भगवान ने उसे अपने सुधार के लिए दिया था। और उसे इसके साथ रहना होगा।

वह अस्पष्ट है. वह कांटा कौन सा था, यह कोई नहीं जानता। और हम ठीक से नहीं जानते कि उसने इससे कैसे निपटा।

लेकिन उनकी बात बहुत सरल थी, भगवान को हमारे दर्द से मुक्त होने से ज्यादा हमारे चरित्र में दिलचस्पी है। लेकिन धन लाभ होता है. अब, क्या इसका मतलब यह है कि गरीब लोग नहीं होंगे? खैर, सच तो यह है कि नीतिवचन की किताब में एक प्रकार की विडम्बना है।

जो व्यक्ति विनम्र होता है, वह अनी होता है, वह ईश्वर पर भरोसा करने वाला और ईश्वर पर आश्रित होता है। अनी हमेशा वह व्यक्ति होता है जो गरीब होता है। सामान्य तौर पर कहें तो उसके पास कोई जमीन नहीं है।

तो, इसलिए, वे दूसरों पर काफी निर्भर हैं। वे दूसरों के लिए काम करते हैं। वे दूसरों की सेवा करते हैं।

वे कुछ अन्य लोगों की तरह अपने जीवन के साधनों के प्रभारी नहीं हैं। तो, क्या बुद्धि स्वास्थ्य, धन और सुधार का लाभ देती है? हाँ ऐसा होता है। यह नहीं कहता कि आप अमीर होंगे।

यह नहीं कहता कि आपको कभी कोई बीमारी नहीं होगी। और इसका मतलब यह नहीं है कि आप हमेशा यह समझेंगे कि क्या करना सही है। लेकिन मुझे पता है कि कई बार लोग बहुत स्पष्ट रूप से पहचानते हैं कि जिस चीज़ को वे एक कठिनाई के रूप में अनुभव करते हैं वह वास्तव में उनके जीवन में एक सुधारात्मक उपाय है।

बात चार, जीवन नियम। योग्यता और विवेक का दामन थामे रहें। यही आपको वास्तविक सुरक्षा प्रदान करता है।

आप जानते हैं, हम सुरक्षा चाहते हैं। मैं चार्ली ब्राउन का बहुत बड़ा प्रशंसक हुआ करता था। और निश्चित रूप से, कार्टून श्रृंखला के भाग के रूप में, आपमें से जो लोग मेरी उम्र के करीब हैं उन्हें याद होगा, लिनस हमेशा अपने कंबल के साथ रहता था।

और जाहिर तौर पर एक दिन चार्ली ब्राउन ने गलत कंबल पर अपनी पिकनिक मनाने का फैसला किया था। और जैसे ही दृश्य सामने आता है, लिनस की उस कंबल के कोने पर मजबूत पकड़ हो जाती है। वह पिकनिक की टोकरी और उसके नीचे जो कुछ भी है, उसके नीचे से उसे निकाल रहा है।

सैंडविच हवा में उड़ रहे हैं और लिनस कह रहे हैं कि सुरक्षा के लिए संघर्ष कोई पिकनिक नहीं है। खैर, यह कुछ ऐसा है जिसे हम समझते हैं। और आपको सुरक्षा कैसे मिलती है? खैर, नीतिवचन 3, 21, और 22 के अनुसार, आप चल सकते हैं, आप बैठ सकते हैं, आप सो सकते हैं।

अब, व्यवस्थाविवरण है। आप जहां भी चलते हैं, जब आप अपने दरवाजे पर आते हैं, जब आप बैठते हैं, जब आप सोते हैं, जब आप बिस्तर पर जाते हैं, ये रूपांकन दिखाई देते रहते हैं। आपका जीवन सुरक्षित है, आप सुरक्षित हैं।

ईमानदारी का जीवन. आप जानते हैं, हमारे लिए इस बारे में बात करना आसान है कि हमें अपने पैसे के साथ सही काम कैसे करना है। कभी-कभी यह वास्तव में इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने पैसे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि आप अपने पैसे का उपयोग कैसे करते हैं, यह वास्तव में आपको बहुत कुछ दिखाएगा कि आप ज्ञान और भगवान के भय को समझते हैं या नहीं। क्योंकि

आप अपने पैसे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह दर्शाता है कि वह वास्तव में आपके लिए क्या मूल्यवान है। वह क्या है जो आपके लिए महत्वपूर्ण है? और इसलिए, अगर किसी को कोई ज़रूरत है और आप उसे टालने के लिए प्रलोभित हैं, तो बुद्धिमान व्यक्ति कह रहा है, यह वह पड़ोसी नहीं है जो आपको होना चाहिए।

जब यह आपके पास हो, तो आप सुनिश्चित करें कि आप इसका उपयोग करें। आप इसे देना सुनिश्चित करें. आप स्वयं को लाभ पहुँचाने के लिए किसी संदेहास्पद व्यक्ति के साथ योजना नहीं बनाते हैं।

झगड़ा मत करो. उपद्रवी से ईर्ष्या मत करो. ये चीजें सरल लगती हैं, लेकिन मैं आपको चुनौती देता हूँ कि जैसा कि नीतिवचन कहते हैं, वास्तव में इन्हें अपने दिमाग में रखें और उन्हें लागू करें क्योंकि ज्यादातर समय हमारी परेशानियां इस प्रकार की चीजों का उल्लंघन करने से आती हैं।

और फिर हमें जो मिलेगा वह सम्मान का जीवन है। अभिशाप, अभिशाप के बदले वरदान मिलेगा। हमें तिरस्कार के बदले अनुग्रह मिलेगा।

और हमें लज्जा के स्थान पर सम्मान मिलेगा। यह व्याख्यान जिस विरोधाभास के साथ समाप्त होता है। पांचवीं छोटी बातचीत में, जो अध्याय चार के पहले भाग में आती है, पिता बताते हैं कि उन्होंने अपने माता-पिता से क्या सीखा।

बच्चा, और विशेष रूप से किशोर, बहुत विशेष देखभाल का व्यक्ति था। और अपने माता-पिता से सीखना एक वास्तविक अवसर है। अब, मेरे माता-पिता मेरी किसी भी औपचारिक शिक्षा में बहुत अधिक शामिल नहीं थे, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा जो मुझे प्राप्त हुई वह मेरे माता-पिता से मिली।

और अब जब मैं अपने जीवन पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे बस यह एहसास होता है कि जिन चीजों को महत्व देना मैंने सीखा, और जो चीजें मैंने सीखीं वे महत्वपूर्ण थीं, मैंने अपने माता-पिता से सीखी थीं। उदाहरण के लिए, मैंने अपने पिता से जो चीजें सीखीं, उनमें से एक यह थी कि रिश्तों का पूरा कारोबार योजना बनाने में नहीं, बल्कि अपनी बात रखने में होता है। और मेरे पिता की प्रतिबद्धता थी कि उन्होंने जो कहा वह सच था, जो उन्होंने महत्वपूर्ण समझा, लोगों के प्रति उस प्रतिबद्धता को बनाए रखा, तब भी जब वे वास्तव में उम्मीद नहीं कर रहे थे कि उन्हें ऐसा करना चाहिए।

और एक बात जो मैंने देखी वह सच थी। यदि हेरोल्ड कॉनकल ने कहा कि वह कुछ करेगा, तो वह ऐसा करेगा। और इसने उसे सबसे अच्छे पड़ोसियों में से एक बना दिया, जिसे सभी ने स्वीकार किया।

मैंने बस यही सीखा. इसी तरह हम सीखते हैं. यह माता-पिता को दादाजी की शिक्षा है क्योंकि माता-पिता कह रहे हैं, हाँ, मैंने यह अपने माता-पिता से सीखा है।

तो, बुद्धि ऐसी चीज़ होनी चाहिए जिसे संजोया जाए, और यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहे। इज़राइल में शिक्षा के बारे में यहाँ बस एक छोटा सा शब्द है, और शिक्षा वास्तव में कैसे हुई। हम इसके बारे में बिल्कुल भी बहुत कुछ नहीं जानते हैं, लेकिन कुछ छोटी-छोटी बातें हैं।

और उनमें से एक यशायाह 28 में घटित होता है। यशायाह 28 में, भविष्यवक्ता उन लोगों की निंदा कर रहा है जिन्हें शिक्षक और नेता माना जाता है, अर्थात्, पुजारी और भविष्यवक्ता। और मूलतः, वहाँ की राजधानी एप्रैम में, वे विलासिता में रह रहे हैं।

जैसा कि हम आमोस की पुस्तक में पढ़ते हैं, वे अपनी संपत्ति पाने के लिए गरीबों पर अत्याचार कर रहे हैं, और वे नशे में हैं, और वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। और भविष्यवक्ता कह रहा है, तुम जानते हो, परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध न्याय करने जा रहा है, और निःसंदेह, वह न्याय असीरियन सेना, प्रभु के शक्तिशाली व्यक्ति, के रूप में आ रहा है। लेकिन जब भविष्यवक्ता ने उन सभी पर नशे में होने और अपनी भूमिकाएँ निभाने में असमर्थ होने का आरोप लगाया, तो उनके पास यह प्रत्युत्तर था।

वह क्या सोचता है कि हम कौन हैं? क्या वह सोचता है कि हम महज़ शिशु हैं? क्या वह सोचता है कि हम tzav , tzav , tav , l'tav सीख रहे हैं ? अब, यह लगभग निश्चित रूप से इस बात का संकेत है कि माता-पिता अपने बच्चों को किस तरह पढ़ाते हैं। शायद हममें से बहुतों ने स्कूल में पढ़ना सीखा, लेकिन इज़राइली स्थिति में, तज़व एक हिब्रू अक्षर था, और तव अगला हिब्रू अक्षर था। ये वर्णमाला में प्रथम नहीं हैं, लेकिन ये वर्णमाला में क्रम में हैं।

और इसलिए पहली चीज़ जो आप करना शुरू करेंगे वह अपने बच्चे को वर्णमाला सिखाना होगा, और इस प्रकार यह तज़व से तव , तज़व से तव होगा । यही वह कहावत दोहराई जा रही है. और निस्संदेह, फिर भविष्यवक्ता कहते हैं, और जो होने वाला है वह यह है कि, आप उपहास करते हैं, और आप कहते हैं, आप सोचते हैं कि हम मात्र बच्चे हैं, और आप हमें वर्णमाला सिखाने जा रहे हैं जैसे कि हम भविष्यवक्ता नहीं हैं, और यदि हम कानून जानने वाले पुजारी नहीं हैं।

और फिर भविष्यवक्ता कहता है, हाँ, ठीक है, ईश्वर आपसे बात करेगा, और यह असीरियन सेना, एक विदेशी भाषा के रूप में होगा, और आप उसे सुनेंगे। और फिर आप जो सुनने जा रहे हैं वह है, और यह यरूशलेम के खिलाफ घेराबंदी के बारे में बात कर रहा है, और जब सेनाएं शहर के चारों ओर हैं, तो आप जो सुनने जा रहे हैं वह है तज़व से तव , तज़व से तव , तज़व से तव , बिल्कुल एक शिशु की तरह जो वर्णमाला सीख रहा है। तो, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इज़राइल में, सीखना घर में होता था, और साक्षरता घर में होती थी।

और इसलिए, शिक्षक यहाँ जो कह रहे हैं वह यह है कि अपने माता-पिता से सीखना एक ऐसा ज्ञान है जो आपको एक बहुत ही विशेष दर्जा प्रदान करता है। यह हमें वार्ता संख्या छह में दुष्टों के विरुद्ध चेतावनी की ओर ले जाता है। फिर से, इस तथ्य पर जोर दिया गया कि ज्ञान सीखना चाहिए।

नीतिवचनों में निश्चित रूप से दोहराव होता है, नीतिवचनों में काफी दोहराव होता है, अलग-अलग तरीकों से पुनर्संदर्भित किया जाता है, और बहुत महत्वपूर्ण होता है। और फिर माता-पिता दुष्टों के मार्ग का विवरण देते हैं, कि यह वह मार्ग है जिससे बचना चाहिए। यह एक खुली सड़क है।

उस रास्ते को चुनना बहुत आसान है। इसलिए, आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप उस रास्ते से नहीं भटक रहे हैं जिस पर आपको जाना चाहिए। दुष्ट वे हैं जो सो नहीं सकते, यदि वे किसी को अपने जीवन में नहीं खींच सकते।

और यह संस्कृति का इतना बड़ा आकर्षण है। मुझे यह हर समय दिखाई देता है। हम दावा करते हैं कि हम ईसाई हैं।

हम कहते हैं कि हमारे पास ईसाई मूल्य हैं। लेकिन जब आप वास्तव में हमारे जीने के तरीके, हमारे मूल्यों और हमारी प्रतिष्ठा को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि संस्कृति, जिसे यहां कहावतें दुष्ट कहती हैं, हमें भटकाने का एक तरीका है। इसलिए इसे समकालीन संदर्भ में कहें तो ईसाई को दूसरे व्यक्ति से अलग करना वास्तव में थोड़ा मुश्किल हो जाता है।

लेकिन संस्कृति और समाज यही करते हैं। यह कहता है कि चीजें इस तरह से की जानी चाहिए। और यहां कनाडा में, जहां मैं रहता हूं, यह एक बहुत ही जबरदस्ती वाली चीज बन गई है, तेजी से जबरदस्ती करने वाली।

वास्तव में, हमारे प्रधान मंत्री ने यहां तक कहा कि, यदि आप मेरी पार्टी से संबंधित हैं, तो आप गर्भपात को मंजूरी देंगे। सीधा और सरल। दुष्ट लोग इसी तरह काम करते हैं।

ये कहावत तो यही कह रही है। प्रकाश के मार्ग और अंधकार के मार्ग हैं। और जितना अधिक आप जानते हैं, जितना बेहतर आप प्रकाश को देखते हैं, उतना ही बेहतर आप सही रास्ते पर बने रहने में सक्षम होते हैं।

लेकिन अंधेरे में, निःसंदेह, आप उतना ही अधिक फँसते हैं, और आपको पता भी नहीं चलता कि आप किस चीज़ से फिसले। तो अंततः, हम सातवें नंबर पर बात करने आते हैं, और जिस पर मैंने पहले जोर दिया था, वह है सही दिमाग। कि हर चीज़ दिमाग से शुरू होती है।

और यह यहाँ विशेष रूप से स्पष्ट है जब हम इस छोटी सी बातचीत के श्लोक 23 पर आते हैं। जो कुछ तुम देखते हो, उस से अपने मन की रक्षा करो, क्योंकि तुम्हारे मन से ही जीवन के निर्णय होते हैं। आप वह नहीं हैं जो आप सोचते हैं कि आप हैं।

आप क्या सोचते हैं कि आप क्या हैं। अब मुझे यह बहुत गंभीर लगता है क्योंकि मुझे कुछ चीजें पसंद नहीं हैं जिनके बारे में मैं सोचता रहता हूँ। और यह कहना कि आप वास्तव में यही हैं, एक बहुत परेशान करने वाली बात है।

लेकिन यह कहावत सचमुच बहुत-बहुत सच है। उन सभी चीजों में से जिनकी आप रक्षा करते हैं, अपने दिमाग की रक्षा करें। यह सचमुच वही है जो यीशु ने कहा था।

तुम ने यह कहते सुना है, कि तुम व्यभिचार न करना। लेकिन मैं आपसे कहता हूं, जब आप उस व्यक्ति को देखते हैं, यह कल्पना करते हैं कि आप उसके साथ कैसे संबंध बना सकते हैं, तो व्यभिचार पहले ही शुरू हो चुका है। यह बिलकुल वैसा ही है जैसा मूसा ने कहा था।

उसने कहा, तुम लालच न करो। तू अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच न करना। व्यवस्थाविवरण में ये 10 शब्द हैं।

तू अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच न करना। व्यभिचार कहाँ से शुरू होता है? यह आपके दिमाग में शुरू होता है। इसकी शुरुआत कहीं और नहीं होती।

इसलिए, संकीर्ण मार्ग का अनुसरण करना, जैसा कि यीशु ने कहा था, या जैसा कि हम इसके बारे में यहां श्लोक 25 से 27 में पढ़ते हैं, उस संकीर्ण मार्ग का अनुसरण करने के लिए ध्यान की आवश्यकता होती है। इसके लिए आवश्यक है कि हम उन तर्कसंगतताओं के बारे में बहुत सावधान रहें जिनकी हमें परीक्षा हो सकती है। इसका मतलब है कि हमें सही चीजों पर ध्यान देने की जरूरत है।'

इसलिए, इन छोटी-छोटी बातों में, माता-पिता बच्चे की सोच, युवा व्यक्ति, किशोरों की सोच को निर्देशित करना चाहते हैं, ताकि वे उस रास्ते पर बने रहें जिसे वह सही रास्ता कहते हैं। अर्थात्, यह जानना कि इस प्रकार के निर्णय लेने का क्या मतलब है जो आपको ईश्वर और लोगों के साथ सही रिश्ते में बनाए रखेगा।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ऑगस्ट कोकेल हैं। यह सत्र संख्या 5 है, जीना सीखना, व्याख्यान 3, 4, 5, 6, और 7।